निमंत्रण / घोषणा

लोकविद्या जन आन्दोलन
पहला अंतर्राष्ट्रीय अधिवेशन
12–14 नवम्बर 2011, वाराणसी, भारत

विद्या आश्रम आपको 12–14 नवम्बर, 2011 के बीच होने वाले लोकविद्या जन आन्दोलन के पहले अंतर्राष्ट्रीय अधिवेशन में भाग लेने के लिए आंमत्रित करता है। यह अधिवेशन वाराणसी में विद्या आश्रम के सारनाथ परिसर में होगा।

जन आन्दोलन और ज्ञान का दृष्टिकोण

विस्थापन आज भारत में सामाजिक आन्दोलनों का सबसे बडा सरोकार बन गया है। यह विस्थापन जमीन, घर, रोजगार, संसाधन और बाजार सभी से हो रहा है। किसानों के आन्दोलन प्रमुख रूप से कृषि उत्पादन का दाम हासिल करने के लिए, कर्ज और बिजली के लिए तथा जबरदस्ती किये जा रहे भूमि अधिग्रहण के खिलाफ होते रहे हैं। आदिवासियों और स्थानीय समाजों के आंदोलन घर, जमीन और जंगल से बेदखली तथा पर्यावरणीय विनाश के खिलाफ चलते रहे हैं। शहरी गरीबों और झोपड़पट्टियों में रहने वालों के संघर्ष हमेशा ही विस्थापन के विरोध में और सामान्य नागरिक व सामाजिक अधिकारों को हासिल करने के लिए होते रहे हैं। वैश्विक बाजार और बड़ी पूँजी की घुसपैठ द्वारा स्थानीय बाजार को तहस–नहस करने के खिलाफ कारीगर और ठेले–गुमटी पर धंधा करने वाले बड़े पैमाने पर लामबंद होते रहे हैं। ये सभी आंदोलन कुछ समय से विस्थापन के विरोध के एक व्यापक आन्दोलन का रूप ले रहे हैं। एक तरफ शासन और प्रशासन की नई व्यवस्थायें इस प्रतिरोध को बड़े पैमाने पर दबाने में लगी हुई हैं, तो दूसरी तरफ लोगों के साथ खड़े सामाजिक कार्यकर्ता एक नई जन एकता को आकार देने के रास्ते खोज रहे हैं।

ये सब विस्थापन के शिकार लोग और समाज ऐसे हैं जो कभी कालेज नहीं गये हैं और अपनी जिंदगी लोकविद्या वे बल पर चलाते हैं। लोकविद्या उनका अपना वह ज्ञान है जो उन्होंने विरासत में प्राप्त किया है; काम के स्थान पर, समाज में और सहकर्मियों से सीखा है और जिसको उन्होंने अपनी जरूरत, अनुभव और प्रयोगों के बल पर अपनी तर्क बुद्धि से प्रभावी और समसामयिक बनाया है। विस्थापन उनकी जिंदगी की चौखट में ऐसे बदलाव ले आता है जिनके चलते वे लोकविद्या, यानि अपने ज्ञान के इस्तेमाल से वंचित हो जाते हैं और बाजार में एक सस्ते मजदूर के रूप में खड़े कर दिये जाते हैं। लोकविद्याधर समाज का लोकविद्या से रिश्ता टूटने की इस प्रक्रिया का हर हालत में मुकाबला करना ज़रूरी है। वास्तव में लोकविद्या, यानि लोगों का सोचने का तरीका, उनके मूल्य, उनका संगठन का तरीका, उनका हुनर, ज्ञान, सौन्दर्य बोध और नैतिक संवेदनायें, कुल मिलाकर उनकी ज्ञान की दुनिया ही उनकी शक्ति का प्रमुख स्रोत है। भारत में और सारी दुनिया में फैले किसानों, आदिवासियों, कारीगरों, छोटा–छोटा धंधा करने वालों और विविध स्थानीय समाजों के बीच यदि कुछ समान है, तो वह लोकविद्या ही है। यही इन सबके बीच एकता की कड़ी है। यह समझना जरूरी है कि आज मुक्ति का रास्ता ज्ञान की दुनिया से होकर गुजरता है। लोकविद्या दृष्टिकोण सूचना युग का जनता का दृष्टिकोण है।

लोकविद्या का दावा

दुनिया भर में किसान और आदिवासी एक नया दावा पेश कर रहे हैं। अपनी–अपनी भाषा में और अपने–अपने तरीकों से वे यह कह रहे हैं कि अपने ज्ञान, मूल्यों और विश्वासों के साथ जीना और वह सब ज्ञान प्राप्त करना जो वे चाहते हैं, ये उनके जन्म सिद्ध अधिकार हैं। इन्हें उनसे छीना नहीं जा सकता। एशिया, अफ्रीका और दक्षिणी अमेरिका में नये किस्म की हलचल दिखाई दे रही है, जिसमें पूरी दुनिया के शोषित, उत्पीड़ित एवं विस्थापित लोगों की एक नई एकता के संकेत हैं। इस बार इस एकता का आधार लोकविद्या में होना है यानि उनके इर्द–गिर्द के समाजों और प्रकृति की उनकी समझ में जो समान है, उसमें होना है।

इसका यह अर्थ है कि किसानों और आदिवासियों, कारीगरों और महिलाओं तथा छोटा–छोटा धंधा करने वालों और मज़दूरों को लोकविद्या का दावा पेश करना चाहिए। यह कोई जीविकोपार्जन की ज़रूरत भर का दावा नही है, यह एक नई दुनिया बनाने का दावा है। उन्हें यह दावा पेश करना है कि पूँजी और ज्ञान के व्यवसायीकरण को केवल लोकविद्या ही बुनियादी चुनौती दे सकती है। उन्हें यह दावा भी पेश करना है कि सत्य व सामाजिक और आर्थिक बराबरी के समाज का ज्ञान का आधार केवल लोकविद्या में है। हमें यह समझना होगा कि जब तक ये दावे पेश नहीं

किये जाते, तब तक हम बुनियादी सामाजिक परिवर्तन के अपने असरहीन पूर्वाग्रहों में फँसे रहेंगे। ऐसा लोकविद्या–ज्ञान का दावा हमारे विचारों और कार्यों में एक नई और वास्तविक उड़ान भर दे सकता है, जो आर्थिक, सामाजिक, राजनैतिक और सांस्कृतिक सभी क्षेत्रों में नई सोच को जन्म दे। ऐसे दावों को आकार देने की प्रक्रिया ही लोकविद्या जन आंदोलन है।

लोकविद्या जन आन्दोलन (लो.ज.आ.)

वैश्विक आर्थिक और पर्यावरणीय संकट ने उन विचारों और संस्थाओं को बेनकाब कर दिया है, जिन्होंने बड़े पैमाने पर लोगों को भूखा मारकर और प्रकृति का विनाश करके चंद लोगों की जेबें भरी हैं। लोकविद्या जन आन्दोलन इसी बहुमत जनता का ज्ञान आन्दोलन है, यानि उन लोगों का ज्ञान आंदोलन है, जिन्हें पूँजी के प्रतिष्ठानों, विश्वविद्यालयों और राज्य की व्यवस्थाओं ने अज्ञानी घोषित कर रखा है। ज्यादातर लोग यह मानते हैं कि विश्वविद्यालयों के बाहर ज्ञान का सागर है। समाज में ज्ञान का विस्तृत फैलाव है, ऐसा मानने वालों की कोई कमी नही है। यानि लोगों के पास ज्ञान है और उस ज्ञान की अनुभूति भी। और फिर भी न उन लोगों को और न उनके ज्ञान को ही समाज में सम्मान है। उनके ज्ञान के बल पर अच्छी आय नही हो सकती, इसलिए लोग गरीब हैं। सार्वजनिक दुनिया में उनके ज्ञान को सम्मान नही है, इसलिए उनके मूल्य और संस्कृति हाशिये पर पड़े रहते हैं। उनके ज्ञान का जन संगठनों के साथ कोई सीधा सम्बन्ध नहीं है, इसलिए उनका कोई राजनैतिक महत्व नहीं है। एक ऐसे राजनैतिक आंदोलन की ज़रूरत है, जिसमें लोग अपने ज्ञान के आधार पर गति पैदा करते हैं। लोकविद्या जन आंदोलन एक ऐसा ही आंदोलन है। प्रस्तावित अंतर्राष्ट्रीय अधिवेशन किसानों, कारीगरों, आदिवासियों, छोटा–छोटा धंधा करने वालों, महिलाओं और नौजवानों के आंदोलनों को एक ज्ञान के मंच पर इकट्ठा करने का प्रयास है। यह उनके ज्ञान का मंच है, लोकविद्या का मंच है। ऐसे ही मंच से यह दावा किया जा सकता है कि लोकविद्या में ही समाधान है।

दुनिया में हो रहे और ज्ञान आन्दोलन

दुनिया में कई जगह नये किस्म के आन्दोलन शुरू हुए हैं, ऐसे आन्दोलन जिनमें एक सर्वथा नई राजनैतिक सोच दिखाई देती है और जिन्हें लोकविद्या जन आन्दोलन कहा जा सकता है। भारत में 'लोकविद्या' का अभियान, बोलिविया से शुरू हुआ 'धरती माँ के अधिकार' का आन्दोलन, इक्वाडोर में 'प्रकृति के अधिकार' का विचार, वाया कम्पेसिना नाम के अंतर्राष्ट्रीय किसान संगठन का 'खाद्य सम्प्रभुता' का विचार व अभियान तथा यूरोप व अमेरिका में छात्र आन्दोलन में आकार ले रहे 'ज्ञान के पूँजीवाद' और 'ज्ञान मुक्ति' के विचार एक नई राजनीतिक बहस को जन्म दे रहे हैं। इन सभी में यह आग्रह है कि लोगों के पास ज्ञान होता है और लोकविद्या साइंस के नाम पर प्रसारित ज्ञान से किसी भी अर्थ में कम नहीं है। समझ यह है कि पिछली सदियों में जनता पर और प्रकृति पर जो कहर ढाया गया है और जो इस सूचना युग के नये साम्राज्य में कई गुना बढ़ गया है, उसे वही लोग ठीक कर सकते हैं, जो आधुनिक ज्ञान की व्यवस्थाओं में समा नही गये हैं।

लोकविद्या जन आंदोलन यह दावा पेश करता है कि दुनिया भर में हो रहे ऐसे ज्ञान आंदोलन, संघर्षों का एक नया बिरादराना बना रहे हैं, लोगों का एक विश्वव्यापी ज्ञान आन्दोलन खड़ा कर रहे हैं।

कार्यक्रम

तीन दिवसीय अधिवेशन के पहले दो दिन निम्नलिखित पर चर्चा होगी–

- लोकविद्या और लोकविद्या जन आन्दोलन का विचार
- संघर्ष, जो इन विचारों को प्रेरित करते हैं और उनके लिए जगह बनाते हैं
- लोकविद्या जन आन्दोलन का संगठन और आगे के लिए विचार।

14 नवम्बर को लोकविद्या जन आंदोलन में भाषा, कला, संचार माध्यम और दर्शन की भूमिका और स्थान पर चर्चा होगी। वे लोग, जो लोकविद्या विचार के साथ काम नही करते हैं, उन्हें भी लोगों के ज्ञान आंदोलन पर अपने विचार रखने का समय मिलेगा।

अधिवेशन के दौरान विद्या आश्रम रहने–खाने का इंतजाम करेगा। यात्रा का खर्च भागीदारों को खुद उठाना होगा।

जुलाई और अगस्त के महीनों में अधिवेशन की तैयारी में इन्टरनेट पर बहस चलाई जायेगी। जो इस बहस में रुचि रखते हैं और शामिल होना चाहते हैं, हमें खबर करें। ब्लाग http://lokavidyajanandolan.blogspot.com पर वैसे भी विचारों का आदान–प्रदान जारी रहेगा। यह ब्लाग भी देखें।

अधिक जानकारी के लिए निम्नलिखित का उपयोग करें।

- वेबसाइट : www.vidaashram.org
- ब्लाग : http://lokavidyajanandolan.blogspot.com
- ई मेल : vidyaashram@gmail.com

निम्नलिखित व्यक्तियों से भी सम्पर्क किया जा सकता है–

1.	**प्रेमलता सिंह**, वाराणसी, उत्तर प्रदेश	vidyaashram@gmail.com	09369124998
2.	**रवि शेखर**, लखनऊ, उत्तर प्रदेश	ravithelight@gmail.com	09369444528
3.	**अवधेश द्विवेदी**, सिंगरौली, मध्य प्रदेश	awadhesh.sls@gmail.com	09425013524
4.	**संजीव कीर्तने**, इंदौर, मध्य प्रदेश	sanjeev.kirtane48@gmail.com	09926426858
5.	**गिरीश सहस्रबुद्धे**, नागपुर , महाराष्ट्र,	irigleen@gmail.com	09422559348
6.	**दिलीप दूबे**, देवघर, झारखण्ड	pravah001@sify.com	09431132568
7.	**अजय**, हाजीपुर , बिहार		09955772332

चित्रा सहस्रबुद्धे
समन्वयक, विद्या आश्रम
ई–मेल : vidyaashram@gmail.com
मो. : 09838944822